पतझर में टूटी पत्तियाँ (रवींद्र केलेकर)

पाठ का परिचय

प्रथम प्रसंग (गिन्नी का सोना)–प्रस्तुत प्रसंग में लेखक ने आदर्शवादिता और व्यावहारिकता के सामंजस्य को जग-जीवन के लिए आवश्यक माना है। इसकी समानता उन्होंने 'गिन्नी के सोने' से की है। जिस प्रकार शुद्ध सोने में थोड़ा-सा ताँबा मिलाकर 'गिन्नी का सोना' बनाया जाता है और शुद्ध सोने को आभूषण बनाने योग्य बनाया जाता है, उसी प्रकार आदर्शवादिता और व्यावहारिकता का सामंजस्य कर इस जगत को जीने और रहने योग्य बनाया जा सकता है।
द्वितीय प्रसंग (झेन की देन)–प्रस्तुत प्रसंग में लेखक बताना चाहता है कि आज मनुष्य एक मशीन हो गया है। उसके जीवन में शांति, ठहराव या आत्म-निरीक्षण के लिए कोई समय नहीं है। इस कारण वह अनेक रुग्ण मनोवृत्तियों का शिकार बन गया है। जापान में यह प्रवृत्ति अधिक देखने को मिलती है। ऐसे में आवश्यकता है किसी ऐसी पद्धति की, जो भागदौड़ भरे इस जीवन में कुछ पलों के लिए सुख, शांति और आत्मसंतुष्टि की अनुभूति करा सके। प्रस्तुत प्रसंग बौद्ध दर्शन में वर्णित ध्यान की उस पद्धति की याद दिलाता है, जिसके कारण जापान के लोग आज भी अपनी व्यस्ततम दिनचर्या के बीच कुछ चैन भरे पल पा जाते हैं।

पाठ का सारांश

I. गिन्नी का सोना

गिन्नी का सोना–शुद्ध सोने में थोड़ा-सा ताँबा मिलाकर गिन्नी का सोना बनाया जाता है। यह शुद्ध सोने से अधिक चमकदार और मजबूत होता है। स्त्रियाँ इसी सोने के आभूषण बनवाती हैं।
आदर्शवादिता और व्यावहारिकता का सामंजस्य–कुछ लोग शुद्ध आदर्शों में थोड़ा-सा व्यावहारिकतारूपी ताँबा मिलाकर चलाते हैं। उन लोगों को 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' कहकर उनकी प्रशंसा की जाती है। यह प्रशंसा केवल व्यावहारिकता की होती है, आदर्शों की नहीं। इसलिए ऐसे लोगों के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटते चले जाते हैं और व्यावहारिकता आगे आने लगती है।
'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' गांधी जी–गांधी जी भी 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' थे। लेकिन उनका आदर्शवाद और व्यावहारिकता का सामंजस्य अलग था। वे आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर नहीं उतारते थे, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। अर्थात् वे सोने में ताँबा नहीं मिलाते थे, बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।
व्यावहारिकता और आदर्शवाद में अंतर–व्यवहारवादी लोग सजग होते हैं। वे लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में खुद तो सफल हो जाते हैं, लेकिन दूसरों के लिए कुछ नहीं कर पाते। ऐसे लोग समाज को नीचे गिराते हैं।
आदर्शवादी स्वयं के साथ दूसरों को भी ऊपर उठाते हैं। ऐसे लोगों ने ही समाज को शाश्वत मूल्य दिए हैं। इनके कारण समाज ऊपर उठता है।

II. झेन की देन

जापानियों की जीवन-शैली–जापान में लोगों के जीवन की रफ़्तार बहुत बढ़ गई है। वहाँ आदमी चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है। बोलता नहीं, बल्कि बकता है। अमेरिका से प्रतिस्पर्धा करने के लिए वे एक महीने का काम एक दिन में करने की कोशिश करते हैं। दिमाग की रफ़्तार बढ़ा लेने के कारण वे मानसिक रोगों के शिकार हो गए हैं।
लेखक का 'टी-सेरेमनी' में शामिल होना–दिमाग को आराम देने के लिए जापान के लोग 'टी-सेरेमनी' में शामिल होते हैं। यह चाय पीने की एक विधि है, जिसे 'चा-नो-यू' कहते हैं। लेखक अपने मित्र के साथ इस 'टी-सेरेमनी' में शामिल हुआ। एक छह मंजिला इमारत की छत पर सुंदर पर्णकुटी बनाई गई थी। वहाँ अद्भुत शांति थी। ग्राहक का स्वागत करना, चाय बनाना, बरतन साफ़ करना, चाय प्रस्तुत करना सभी क्रियाएँ बहुत ही गरिमापूर्ण ढंग से की गई थीं। शांति कायम रखने के उद्देश्य से वहाँ एक समय में केवल तीन आदमियों के प्रवेश की ही अनुमति थी।
चायपान और उसका लेखक पर प्रभाव–चाय प्यालों में भरकर सामने रख दी गई। केवल दो घूँट चाय थी। लेखक ने एक-एक बूँद चाय पीनी प्रारंभ की। पंद्रह मिनट बाद उसके दिमाग को अद्भुत शांति मिलनी प्रारंभ हो गई। चाय पीते-पीते उसके दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए। केवल वर्तमान क्षण सामने था। वह भी उसे अनंतकाल जितना विस्तृत लग रहा था। उस दिन लेखक को मालूम हुआ कि जीना किसे कहते हैं। झेन परंपरा की यह बड़ी देन जापानियों को मिली है।

शब्दार्थ

गिन्नी = वह सोना जिसमें ताँबा मिला हो। **आदर्श** = अनुकरणीय वस्तु। **व्यावहारिकता** = व्यावहारिक रूप में होने वाली स्थितियाँ। **बखान** = वर्णन। **सूझ-बूझ** = सोचने-समझने की शक्ति। **विलक्षण** = असाधारण। **सजग** = सतर्क, सावधान। **हिसाब** = लेखा-जोखा। **शाश्वत** = सदा रहने वाला। **मनोरुग्ण** = मानसिक रोग/मानसिक बिमारी। **रफ़्तार** = तेज़ी। **प्रतिस्पर्धा** = प्रतियोगिता/मुकाबला। **टी-सेरेमनी** = जापान में चाय पीने का विशेष आयोजन। **चा-नो-यू** = जापान ने टी-सेरेमनी का नाम। **दफ़्ती** = लकड़ी की खोखली सरकने वाली दीवार जिस पर चित्रकारी होती है। **पर्णकुटी** = पत्तों की बनी कुटिया। **बेढब-सा** = बेडौल-सा। **चाजीन** = जापानी विधि में चाय पिलाने वाला। **गरिमापूर्ण** = सलीके से। **भंगिमा** = मुद्रा। **जयजयवंती** = एक राग का नाम। **खदबदाना** = उबलना। **मिथ्या** = झूठ। **विस्तृत** = बहुत अधिक फैला हुआ। **झेन परंपरा** = ध्यान लगाने की परंपरा।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) शुद्ध सोना अलग है और गिन्नी का सोना अलग। गिन्नी के सोने में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया हुआ होता है, इसलिए वह ज़्यादा चमकता है और शुद्ध सोने से मजबूत भी होता है। औरतें अकसर इसी सोने के गहने बनवा लेती हैं।
फिर भी होता तो वह है गिन्नी का ही सोना।
शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने के जैसे ही होते हैं। चंद लोग उनमें व्यावहारिकता का थोड़ा-सा ताँबा मिला देते हैं और चलाकर दिखाते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

तब हम लोग उन्हें 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' कहकर उनका बखान करते हैं।

1. **गिन्नी के सोने में क्या मिला होता है–**
   (क) चाँदी (ख) ताँबा
   (ग) लोहा (घ) पीतल।

2. **गिन्नी के सोने की मजबूती के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
   (i) ताँबे की मिलावट
   (ii) चाँदी की मिलावट
   (iii) पूर्ण शुद्धता
   (iv) कई धातुओं का मिश्रण
   (क) (i) और (ii) (ख) (i) और (iii)
   (ग) केवल (i) (घ) (ii) और (iv).

3. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
   कथन (A)–शुद्ध आदर्श शुद्ध सोने जैसे होते हैं।
   कारण (R)–कुछ लोग उनमें व्यावहारिकता का ताँबा मिला लेते हैं।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. **चंद लोग क्या करते हैं–**
   (क) शुद्ध सोना बेचते हैं
   (ख) शुद्ध आदर्शों का पालन करते हैं
   (ग) सोने में पीतल मिला देते हैं
   (घ) शुद्ध आदर्शों में व्यावहारिकता का ताँबा मिला देते हैं।

5. **'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' उसे कहते हैं, जो–**
   (क) शुद्ध सोना बेचता है
   (ख) शुद्ध आदर्शों पर अडिग रहता है
   (ग) शुद्ध आदर्शों में व्यावहारिकता को मिलाकर चलता है
   (घ) केवल व्यावहारिकता का ही पालन करता है।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(2) व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं, पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं। खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें, यही महत्त्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

1. **व्यवहारवादी किसका हिसाब लगाकर चलते हैं–**
   (क) लेन-देन का (ख) ऊँच-नीच का
   (ग) लाभ-हानि का (घ) अच्छे-बुरे का।

2. **व्यवहारवादी लोगों के हमेशा सजग रहने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
   (i) लाभ-हानि का हिसाब लगाकर चलना
   (ii) स्वार्थ को ऊपर रखना
   (iii) बहुत कम सोना
   (iv) दूसरों की परवाह न करना
   (क) (i) और (ii) (ख) (ii) और (iii)
   (ग) (iii) और (iv) (घ) (ii) और (iv).

3. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
   कथन (A)–व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं।
   कारण (R)–वे हानि-लाभ का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. **आदर्शवादी लोगों ने समाज को क्या दिया है–**
   (क) सन्मार्ग पर चलने का उपदेश दिया है
   (ख) जीवन जीने का तरीका दिया है
   (ग) शाश्वत मूल्यों की संपदा दी है
   (घ) दूसरों से आगे निकलने की प्रेरणा दी है।

5. **समाज को पतन की ओर ले जाने वाले लोग कौन हैं–**
   (क) आदर्शवादी लोग (ख) समाजवादी लोग
   (ग) व्यवहारवादी लोग (घ) पूँजीवादी लोग।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ग)।

(3) कहने लगे, "हमारे जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं। .... अमेरिका से हम प्रतिस्पर्धा करने लगे। एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही पूरा करने की कोशिश करने लगे। वैसे भी दिमाग की रफ़्तार हमेशा तेज़ ही रहती है। उसे 'स्पीड' का इंजन लगाने पर वह हज़ार गुना अधिक रफ़्तार से दौड़ने लगता है। फिर एक क्षण ऐसा आता है जब दिमाग का तनाव बढ़ जाता है और पूरा इंजन टूट जाता है।.... यही कारण है जिससे मानसिक रोग यहाँ बढ़ गए हैं।..."

1. **गद्यांश का वक्ता कौन है–**
   (क) लेखक (ख) लेखक का जापानी मित्र
   (ग) एक डॉक्टर (घ) एक पत्रकार।

2. **'अमेरिका से हम प्रतिस्पर्धा करने लगे।'–वाक्य में 'हम' कौन हैं–**
   (क) चीन के लोग (ख) भारत के लोग
   (ग) जापान के लोग (घ) फ्रांस के लोग।

3. **जापानियों के जीवन की रफ़्तार बढ़ने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
   (i) अमेरिका से प्रतिस्पर्द्धा
   (ii) एक महीने का काम एक दिन में करने की चेष्टा
   (iii) अधिक ऊर्जा आ जाना
   (iv) आगे निकलने की इच्छा
   (क) (i) और (ii) (ख) (ii) और (iii)
   (ग) (iii) और (iv) (घ) केवल (iv).

4. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
   कथन (A)–दिमाग की रफ़्तार हमेशा तेज़ होती है।
   कारण (R)–तनाव बढ़ने से इंजन टूट जाता है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

5. 'स्पीड' का इंजन कब टूट जाता है–
(क) जब दिमाग का तनाव बढ़ जाता है
(ख) जब दिमाग शांत हो जाता है
(ग) जब हम अधिक प्रतिस्पर्धा करते हैं
(घ) जब इंजन की स्पीड कम हो जाती है।

उत्तर— 1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (ग) 5. (क)।

(4) वह एक छह मंजिली इमारत थी जिसकी छत पर दफ़्ती की दीवारोंवाली और तातामी (चटाई) की ज़मीनवाली एक सुंदर पर्णकुटी थी। बाहर बेढब-सा एक मिट्टी का बरतन था। उसमें पानी भरा हुआ था। हमने अपने हाथ-पाँव इस पानी से धोए। तौलिये से पोंछे और अंदर गए। अंदर 'चाजीन' बैठा था। हमें देखकर वह खड़ा हुआ। कमर झुकाकर उसने हमें प्रणाम किया। दो...झो.... (आइए, तशरीफ़ लाइए) कहकर स्वागत किया। बैठने की जगह हमें दिखाई। अँगीठी सुलगाई। उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे में जाकर कुछ बरतन ले आया। तौलिये से बरतन साफ़ किए। सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूँज रहे हों। वहाँ का वातावरण इतना शांत था कि चायदानी के पानी का खदबदाना भी सुनाई दे रहा था।

1. इमारत में मंजिलें थीं–
(क) पाँच (ख) छह
(ग) सात (घ) आठ।

2. पर्णकुटी की दीवारें थीं–
(क) ईंटों की (ख) पत्थर की
(ग) काँच की (घ) दफ़्ती की।

3. 'चाज़ीन' द्वारा आगंतुकों के स्वागत की क्रियाओं में सम्मिलित नहीं है–
(क) देखकर खड़ा होना
(ख) कमर झुकाकर प्रणाम करना
(ग) दो··· झो··· कहकर स्वागत करना
(घ) पुष्प भेंट करना।

4. लेखक के पर्णकुटी से प्रभावित होने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–
(i) सुंदरता
(ii) शांत वातावरण
(iii) चाजीन की शिष्टता
(iv) इमारत की ऊँचाई
(क) (i) और (ii) (ख) (ii) और (iii)
(ग) (iii) और (iv) (घ) (i), (ii) और (iii).

5. निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–
कथन (A)–पर्णकुटी का वातावरण बहुत शांत था।
कारण (R)–चायदानी के पानी का खदबदाना भी सुनाई देता था।
(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

उत्तर— 1. (ख) 2. (घ) 3. (घ) 4. (घ) 5. (क)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' पाठ के लेखक का नाम है–
(क) लीलाधर मंडलोई (ख) प्रह्लाद अग्रवाल
(ग) रवींद्र केलेकर (घ) निदा फ़ाज़ली।

2. 'रवींद्र केलेकर का जन्म कब हुआ–
(क) सन् 1920 में (ख) सन् 1915 में
(ग) सन् 1917 में (घ) सन् 1925 में।

3. रवींद्र केलेकर ने हिंदी के अलावा अन्य किस भाषा में लेखन किया–
(क) कोंकणी (ख) मराठी
(ग) गुजराती (घ) ये सभी।

4. 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' पाठ के दोनों प्रसंग प्रेरणा देते हैं–
(क) शिष्ट और सभ्य बनने की
(ख) आदर्शवादी बनने की
(ग) जागरूक और सक्रिय नागरिक बनने की
(घ) व्यवहारवादी बनने की।

5. व्यावहारिकता की तुलना किससे की है–
(क) सोने से (ख) चाँदी से
(ग) लोहे से (घ) ताँबे से।

6. बखान किसका होता है–
(क) आदर्शों का (ख) व्यावहारिकता का
(ग) बुद्धि का (घ) कौशल का।

7. 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श कब पीछे हटने लगते हैं–
(क) जब धन का बखान होने लगता है
(ख) जब बल का बखान होने लगता है
(ग) जब ज्ञान का बखान होने लगता है
(घ) जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है

8. निम्नलिखित में से कौन-से वाक्य 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' से मेल खाते हैं–
(i) व्यवहारवादी केवल अपने लिए जीते हैं।
(ii) शाश्वत मूल्य आदर्शवादियों की देन हैं।
(iii) हमें भूत और भविष्य में नहीं, वर्तमान में जीना चाहिए।
(iv) लाभ-हानि का हिसाब लगाकर चलना चाहिए।
(क) केवल (i) (ख) (ii) और (iii)
(ग) (i), (ii) और (iii) (घ) केवल (iv).

9. लाभ-हानि का हिसाब लगाकर कौन चलते हैं–
(क) आदर्शवादी (ख) व्यवहारवादी
(ग) समाजवादी (घ) पूँजीवादी।

10. 'झेन की देन' क्या है–
(क) एक जापानी उत्सव
(ख) एक जापानी कला
(ग) बौद्ध दर्शन में वर्णित ध्यान की पद्धति
(घ) एक जापानी खेल।

11. पाठ के अनुसार कहाँ के अस्सी फ़ीसदी लोग मनोरुग्ण हैं–
(क) इंग्लैंड के (ख) अमेरिका के
(ग) रूस के (घ) जापान के।

12. 'झेन की देन' में लेखक किसके साथ बात कर रहा है–
(क) अपने जापानी मित्र के (ख) एक पत्रकार के
(ग) एक डॉक्टर के (घ) एक दुकानदार के।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

13. 'टी-सेरेमनी' में कितने आदमी थे–
(क) दो (ख) तीन
(ग) चार (घ) पाँच।

14. 'चाज़ीन' ने सभी क्रियाएँ की थीं–
(क) गरिमापूर्ण ढंग से (ख) असभ्यतापूर्वक
(ग) अनमने ढंग से (घ) जल्दबाज़ी में।

15. 'गिन्नी का सोना' पाठ के आधार पर लिखिए कि समाज के पास विद्यमान शाश्वत जीवन-मूल्य किनकी देन हैं– *(CBSE 2023)*
(क) महात्मा गांधी की
(ख) आदर्शवादियों की
(ग) व्यवहारवादियों की
(घ) प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों की।

16. 'झेन की देन' पाठ से हमें क्या सीख मिलती है– *(CBSE 2023)*
(क) हमें अपने से बड़े देशों से कभी प्रतिस्पर्धा नहीं करनी चाहिए।
(ख) हमें सिर्फ अपने से छोटे देशों से ही प्रतिस्पर्धा रखनी चाहिए।
(ग) हमें वर्तमान से अधिक अतीत और भविष्य की चिंता करनी चाहिए।
(घ) हमें अतीत और भविष्य की चिंता त्याग कर वर्तमान में जीना चाहिए।

17. जापान में चाय पीने की विधि को क्या कहते हैं–
(क) जलपान (ख) चा-नो-यू
(ग) चाय-पान (घ) नवजीवन।

18. लेखक के अनुसार सत्य क्या है–
(क) वर्तमान (ख) भूतकाल
(ग) भविष्यत् (घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– 1. (ग) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ग) 5. (घ) 6. (ख) 7. (घ) 8. (ग) 9. (ख) 10. (ग) 11. (घ) 12. (क) 13. (ख) 14. (क) 15. (ख) 16. (घ) 17. (ख) 18. (क)।

भाग-2
(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

(I) गिन्नी का सोना

प्रश्न 1 : शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग क्यों होता है? *(CBSE 2015)*

उत्तर : शुद्ध सोने में कोई मिलावट नहीं होती, जबकि गिन्नी के सोने में ताँबे की मिलावट होती है। गिन्नी का सोना शुद्ध सोने से अधिक चमकदार और मजबूत होता है। शुद्ध सोने से आभूषण नहीं बनते, जबकि गिन्नी के सोने से आभूषण बनते हैं।

प्रश्न 2 : प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट किसे कहते हैं?

उत्तर : जो अपने आदर्शों में थोड़ी-सी व्यावहारिकता मिलाकर आचरण करते हैं, उन्हें 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' अर्थात् 'व्यावहारिक आदर्शवादी' कहते हैं।

प्रश्न 3 : शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है? 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' पाठ के आधार पर लिखिए। *(CBSE 2017, 19)*

उत्तर : शुद्ध सोने में ताँबा मिलाकर ही उसे आभूषण बनाने के योग्य बनाया जाता है। तभी उसकी चमक बढ़ती है और वह मजबूत भी हो जाता है। इसी प्रकार व्यावहारिकता के द्वारा ही आदर्शों को आचरण में लाया जा सकता है और उनकी स्थापना की जा सकती है, इसीलिए आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से की गई है।

प्रश्न 4 : गांधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी; उदाहरणसहित इस बात की पुष्टि कीजिए।

उत्तर : गांधीजी 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' थे। वे व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे, आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर नहीं उतरने देते थे। उन्होंने सत्य, अहिंसा जैसे आदर्शों को व्यावहारिक बनाया। उनके सारे आंदोलन सत्य-अहिंसा पर आधारित थे। उनका प्रत्येक व्यवहार लोगों के लिए एक आदर्श था। चरखा कातना, खादी पहनना, स्वदेशी का प्रयोग करना आदि उनके कार्य लोगों के लिए आदर्श बन गए थे। उनके आदर्श व्यवहार ने करोड़ों लोगों को उनका अनुयायी बना दिया था; अतः हम कह सकते हैं कि गांधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी।

प्रश्न 5 : 'शुद्ध सोने में ताँबे की मिलावट या ताँबे में सोना,' गांधीजी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात किस तरह झलकती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : गांधीजी के आदर्श और व्यवहार में 'ताँबे में सोने की मिलावट' वाली बात झलकती है। वे 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' थे। उनका आदर्शवाद व्यावहारिक था। वे ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर नहीं गिरने देते थे, बल्कि व्यावहारिकता को ही आदर्शों के स्तर पर चढ़ा देते थे। अर्थात् उनका प्रत्येक व्यवहार आदर्श बन जाता था और लोग उनके व्यवहार का अनुकरण करने लगते थे।

प्रश्न 6 : 'समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है।' आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : आशय–इसका आशय यह है कि व्यवहारवादी लोग अपने लाभ-हानि का हिसाब लगाकर प्रत्येक कार्य करते हैं। वे भौतिक उन्नति तो कर लेते हैं, लेकिन नैतिक रूप से वे अपने साथ-साथ समाज का भी पतन करते हैं। आदर्शवादी लोग समाज में शाश्वत मूल्यों की स्थापना करते हैं और उनके लिए बलिदान भी देते हैं। राम, कृष्ण, गौतम, महावीर स्वामी और गांधीजी आदि महापुरुषों ने ऐसा ही किया। उन्हीं के कारण शाश्वत मूल्य आज जीवित हैं।

प्रश्न 7 : 'जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है, तब 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझ-बूझ ही आगे आने लगती है।' आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : आशय–इस पंक्ति के द्वारा लेखक आदर्शवादिता और व्यावहारिकता के सामंजस्य को समझाना चाहता है। इसका आशय यह है कि कुछ 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' आदर्शों में थोड़ी-सी व्यावहारिकता मिलाकर आचरण करने लगते हैं। धीरे-धीरे लोग उस थोड़ी-सी व्यावहारिकता में जब अपने लाभ-हानि का विचार करने लगते हैं तो आदर्शवादिता समाप्त होने लगती है और कोरी व्यावहारिकता ही शेष रह जाती है।

प्रश्न 8 : सोना पीछे रहकर ताँबा आगे आ जाता है। कब?

अथवा **'सोना पीछे रहकर ताँबा ही आगे आता है' का आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर : यहाँ सोने से तात्पर्य आदर्शों से और ताँबे से तात्पर्य व्यावहारिकता से है। जब लोग शुद्ध आदर्शोंरूपी सोने में थोड़ा-सा व्यावहारिकता-

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

रूपी ताँबा मिलाकर उनको अपने आचरण में उतारते हैं तो उन्हें 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' कहा जाता है। समाज में अधिकतर 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के व्यवहाररूपी ताँबे का लोग बखान करने लगते हैं, जिसके कारण उनके आचरण से आदर्श अर्थात् सोना धीरे-धीरे कम होने लगता है। इस प्रकार सोना पीछे रहकर ताँबा आगे आ जाता है।

प्रश्न 9 : आदर्श और व्यावहारिकता में क्या अंतर है? शुद्ध आदर्श और व्यावहारिकता की तुलना लेखक ने सोने और ताँबे से क्यों की है?

उत्तर : आदर्श और व्यावहारिकता में बहुत अंतर है। आदर्श का अर्थ है–शुद्ध शाश्वत जीवन-मूल्यों का आचरण करना। व्यावहारिकता का अर्थ है–उचित-अनुचित की चिंता करते हुए आचरण करना। आदर्श में स्वार्थ की मिलावट नहीं होती, जबकि व्यावहारिकता में स्वार्थ की मिलावट होती है। शुद्ध आदर्श सोने की तरह मूल्यवान् और मिलावटरहित होता है, जबकि व्यावहारिकता ताँबे की तरह सस्ती और मिलावट युक्त होती है; इसलिए लेखक ने शुद्ध आदर्श और व्यावहारिकता की तुलना सोने और ताँबे से की है।

प्रश्न 10 : गांधीजी अपने विलक्षण आदर्श चलाने में सफल क्यों रहे?

उत्तर : गांधीजी व्यावहारिक आदर्शवादी थे। वे व्यावहारिकता को पहचानते थे और उसकी कीमत भी जानते थे। उन्हें पता था कि लोग व्यावहारिकता को ही देखते हैं, आदर्शों को नहीं। इसलिए उन्होंने व्यावहारिकता को ही आदर्शों के स्तर तक पहुँचा दिया था। लोग उनके व्यवहार को आदर्श मानकर उनका अनुकरण करते थे। इसलिए गांधीजी अपने विलक्षण आदर्श चलाने में सफल हुए।

(II) झेन की देन

प्रश्न 11 : लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड का इंजन' लगने की बात क्यों कही है? *(CBSE 2016)*

उत्तर : लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड का इंजन' लगने की बात इसलिए कही है; क्योंकि उनके जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। वहाँ लोग चलते नहीं, दौड़ते हैं। बोलते नहीं, बकते हैं। अमेरिका से प्रतिस्पर्धा के कारण वे एक महीने का काम एक दिन में कर लेना चाहते हैं।

प्रश्न 12 : जापान में चाय पीने की विधि को क्या कहते हैं? जहाँ चाय पिलाई जाती है, उस स्थान की क्या विशेषता है?

उत्तर : जापान में चाय पीने की विधि को 'चा-नो-यू' कहते हैं। जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, वह स्थान बहुत शांत और स्वच्छ होता है। वहाँ चाय बनाने से लेकर चाय पिलाने तक की सभी क्रियाएँ बहुत ही गरिमापूर्ण होती हैं। शांति बनाए रखने की दृष्टि से वहाँ एक समय में केवल तीन व्यक्ति ही बैठ सकते हैं।

प्रश्न 13 : लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए। *(CBSE 2015)*

उत्तर : सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा इसलिए कहा होगा; क्योंकि वह अनुभव कर चुका था कि संसार में अधिकतर लोग या तो भूतकाल में जीते हैं और बीती बातों को याद करते रहते हैं या भविष्य की चिंता में खोए रहते हैं। जबकि भूतकाल जा चुका है, उसे वापस नहीं लाया जा सकता और भविष्य में क्या होगा, यह भी हमारे हाथ में नहीं। हमारे सामने केवल वर्तमान है, हम उसी का उपभोग करते हैं। इसलिए वही सत्य है, उसी में जीना चाहिए।

प्रश्न 14 : 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि जापानी लोगों को मानसिक बीमारियाँ अधिक क्यों होती हैं?

उत्तर : जापान में 80 प्रतिशत लोग मानसिक रोगों से ग्रस्त हैं। इसका कारण यह है कि उनके जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। वे एक महीने का काम एक दिन में करने का प्रयत्न करते हैं। इस जल्दबाज़ी के कारण वे तनावग्रस्त हो गए हैं और मानसिक रोगों के शिकार बन गए हैं।

प्रश्न 15 : चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?

उत्तर : चाय पीने के बाद लेखक ने महसूस किया कि उसके दिमाग की रफ़्तार बिलकुल बंद हो गई है। उसे लगा, मानो वह अनंतकाल में जी रहा है। चाय पीते-पीते उसके दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण सामने था और वह अनंतकाल जितना विस्तृत था। उस दिन उसने जीने का वास्तविक मतलब समझा।

प्रश्न 16 : 'चाजीन' ने कौन-सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं?

उत्तर : चाजीन ने अतिथियों का स्वागत, अभिवादन, हाथ-पाँव धुलवाना, अँगीठी सुलगाना, बरतन लाना और उन्हें पोंछना, चाय बनाना, चाय प्रस्तुत करना आदि क्रियाएँ बहुत गरिमापूर्ण ढंग से कीं।

प्रश्न 17 : 'टी-सेरेमनी' में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों?

उत्तर : 'टी-सेरेमनी' में एक समय में केवल तीन आदमियों को प्रवेश दिया जाता था। इस आयोजन में शांति मुख्य बात होती थी। इसलिए शांति बनाए रखने की दृष्टि से ऐसा किया जाता था।

प्रश्न 18 : 'चाजीन' ने चाय बनाने की क्या-क्या तैयारियाँ कीं? उसकी भंगिमा कैसी थी?

उत्तर : 'चाजीन' ने अँगीठी सुलगाई, उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे में जाकर कुछ बरतन लाया। तौलिये से बरतन साफ़ किए। सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था, मानो जयजयवंती के सुर गूँज रहे हों।

प्रश्न 19 : जापानियों को झेन की कौन-सी देन है?

उत्तर : झेन बौद्ध दर्शन में वर्णित ध्यान की एक पद्धति है, जिसमें जापान के लोग अपने व्यस्ततम जीवन के बीच कुछ चैन के पल पा जाते हैं। यहाँ की 'टी-सेरेमनी' झेन परंपरा का ही एक अंग है। 'टी-सेरेमनी' चाय पीने की एक जापानी विधि है, जिसे चा-नो-यू कहते हैं। इसमें बिलकुल शांत और एकांत वातावरण में लोग चाय का सेवन करते हुए अद्भुत शांति का अनुभव करते हैं। यदि उन्हें यह मानसिक शांति प्राप्त न हो तो वे मानसिक रोगी होकर जीवन से दूर हो जाएँगे। उनके मानसिक तनाव को समाप्तकर उन्हें जीवनधारा में बनाए रखना ही जापानियों को झेन की देन है।

प्रश्न 20 : 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' के लेखक के अनुसार 'सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए।' क्या आप लेखक के विचार से सहमत हैं? अपने पक्ष के समर्थन या विरोध में तर्कसहित उत्तर दीजिए। *(CBSE 2023)*

उत्तर : 'सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए।' लेखक के इस कथन से हम पूर्णतः सहमत हैं। भूतकाल बीत चुका होता है। उसे किसी भी प्रकार वापस नहीं लाया जा सकता। भविष्य में क्या होगा, यह

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भी हमारे हाथ में नहीं है। मनुष्य भूत और भविष्य में खोया रहता है, जबकि हमारे सामने केवल वर्तमान है। हम केवल उसी का उपभोग कर सकते हैं। भूत और भविष्य दोनों मिथ्या हैं, केवल वर्तमान ही सत्य है; अतः हमें वर्तमान में ही जीना चाहिए।

प्रश्न 21 : प्याले में कम चाय होने पर उसे पीने में लेखक को डेढ़ घंटा क्यों लगा? *(CBSE 2016)*

उत्तर : चाजीन ने चाय के प्यालों में केवल दो-दो घूँट चाय डाली थी, लेकिन उसे पीने में लेखक को डेढ़ घंटा लगा। इसका कारण यह था कि लेखक और उसका मित्र चुस्कियाँ लेकर एक-एक बूँद चाय पी रहे थे। चाय पीने का तरीका और वहाँ की शांति का महत्त्व चाय पीने से अधिक था। लेखक ने चाय पीने की विधि को पूरी तरह आत्मसात् किया; इसलिए उसे चाय पीने में डेढ़ घंटा लगा।

प्रश्न 22 : जापान में चाय पीना एक 'सेरेमनी' क्यों है? *(CBSE 2019)*

उत्तर : जापान में चाय पीने की एक विधि है, जिसे 'चा-नो-यू' कहते हैं। इसे मस्तिष्क शांति प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसीलिए जापान में चाय पीने की विधि को 'सेरेमनी' माना जाता है

(I) गिन्नी का सोना

प्रश्न 23 : अन्य 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' सोना पीछे रखते थे ताँबा आगे, जबकि गांधीजी 'ताँबा पीछे रखते थे सोना आगे'। इस बात को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : यह बात आदर्शवादिता और व्यावहारिकता के सामंजस्य के विषय में कही गई है। यहाँ सोना आदर्शों का प्रतीक है और ताँबा व्यावहारिकता का। कुछ 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' आदर्शों और व्यावहारिकता का सामंजस्य करते समय आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतार देते हैं। इससे आदर्शों का महत्त्व घट जाता है और वे व्यावहारिकता से पीछे रह जाते हैं। वे सोने को पीछे और ताँबे को आगे रखते हैं। गांधीजी ऐसे व्यावहारिक आदर्शवादी नहीं थे। वे आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर नहीं उतारते थे, बल्कि व्यावहारिकता को ही आदर्श बना देते थे। इससे आदर्शों का महत्त्व बढ़ जाता था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गांधीजी ताँबे को पीछे और सोने को आगे रखते थे।

प्रश्न 24 : व्यवहारवादी और आदर्शवादी मनुष्यों के दृष्टिकोण में क्या अंतर है? उनसे समाज कैसे प्रभावित होता है?

उत्तर : व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। वे लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही जीवन में कोई कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल हो जाते हैं और दूसरों से आगे भी निकल जाते हैं, लेकिन वे यश-कीर्ति और जनसामान्य के मन-मस्तिष्क में ऊपर नहीं चढ़ पाते; क्योंकि ऐसे लोग दूसरों के लिए कुछ नहीं करते। दूसरी ओर आदर्शवादी लोग अपने साथ-साथ दूसरों को भी ऊपर उठाते हैं। वे समाज में शाश्वत मूल्यों की स्थापना करते हैं। राम, कृष्ण, गौतम, महावीर स्वामी और गांधीजी आदि ऐसे ही आदर्शवादी थे। इस प्रकार स्पष्ट है कि आदर्शवादी समाज का उत्थान करते हैं, जबकि व्यवहारवादी समाज को नीचे गिराते हैं।

प्रश्न 25 : गांधीजी ने कैसे सत्य और अहिंसा को अपना हथियार बनाया? 'गिन्नी का सोना' पाठ के आधार पर लिखिए। *(CBSE 2015)*

उत्तर : पाठ में बताया गया है कि गांधीजी कभी भी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर नहीं उतारते थे, बल्कि व्यावहारिकता को ही आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा मिलाकर उसकी कीमत नहीं घटाते थे, बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। उन्होंने सत्य और अहिंसा जैसे आदर्शों को अपना हथियार बनाया और उनके द्वारा स्वतंत्रता के कठिन लक्ष्य को प्राप्त किया। उन्होंने इन आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर लाकर इनका महत्त्व नहीं घटाया, बल्कि अपनी व्यावहारिकता को इन आदर्शों के स्तर तक उच्च और श्रेष्ठ बनाया। इसीलिए ये आदर्श उनके लिए हथियार सिद्ध हुए।

प्रश्न 26 : 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' पाठ के आधार पर 'गिन्नी का सोना' प्रसंग का सारांश लिखिए।

उत्तर : यह प्रसंग विचारप्रधान है तथा लोगों को सक्रिय और जागरूक बनाने की प्रेरणा भी देता है। शुद्ध सोने और गिन्नी के सोने को आधार बनाकर लेखक ने अपनी विषयवस्तु का विस्तार किया है। शुद्धता में चमक और मज़बूती कभी-कभी कम लगती है, जबकि व्यावहारिकता में चमक अथवा सौंदर्य अधिक होता है। इसलिए लोग व्यावहारिकता की ओर अधिक आकर्षित होते हैं, गांधीजी आदर्शवादी थे, परंतु साथ ही वे व्यावहारिकता को आदर्शों की सान पर चढ़ाते थे। लोग उन्हें प्रायः 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' कहते थे। लेखक के अनुसार समाज का उत्थान प्रायः आदर्शवादी लोग करते हैं; क्योंकि व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज का पतन ही किया है।

प्रश्न 27 : 'गिन्नी का सोना' पाठ के आधार पर बताइए कि कौन-से मूल्य शाश्वत हैं? इन मूल्यों की जीवन में उपयोगिता बताइए।

उत्तर : हमारे विचार से सत्य, अहिंसा, परोपकार, त्याग, बंधुत्व, प्रेम आदि ऐसे मूल्य हैं, जो शाश्वत हैं। समय-समय पर राम, कृष्ण, गौतम, महावीर, गांधी आदि महापुरुषों ने इन मूल्यों की स्थापना और पुनर्स्थापना की। इनकी प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है; जितनी पहले थी। अहिंसा के द्वारा आज समाज में फैली हिंसा की प्रवृत्ति को रोका जा सकता है। परोपकार और त्याग से भ्रष्टाचार का निवारण किया जा सकता है। बंधुत्व और प्रेम से विखंडित होते समाज को एकता के सूत्र में बाँधा जा सकता है। हिंसा, आतंक, ईर्ष्या, द्वेष और भ्रष्टाचार आज के जीवन की सबसे बड़ी चुनौतियाँ हैं। इनका सामना सत्य, अहिंसा, त्याग, परोपकार, प्रेम और बंधुत्व के द्वारा ही किया जाता है; अतः वर्तमान में ये मूल्य और भी अधिक उपयोगी हो गए हैं।

प्रश्न 28 : 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' में गांधीजी के संदर्भ में दो प्रकार के सोने की चर्चा क्यों की गई है और कैसे कहा जा सकता है कि गांधीजी गिन्नी का सोना थे? अपना तर्कसम्मत मत व्यक्त कीजिए। *(CBSE 2020)*

उत्तर : 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' पाठ में गांधीजी के संदर्भ में दो प्रकार के सोने की बात इसलिए की गई है, क्योंकि इसके द्वारा लेखक गांधीजी के आदर्शवाद को समझाना चाहता है। सोना दो प्रकार का होता है—शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना। शुद्ध सोने में मिलावट नहीं होती। वह मज़बूत नहीं होता; इसलिए उससे आभूषण नहीं बनाए जाते। गिन्नी के सोने में ताँबे की मिलावट होती है। वह मज़बूत होता है; इसलिए उसे आभूषण बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। पाठ में आदर्शों की तुलना शुद्ध सोने से की गई है। आदर्शवादी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

लोग आदर्शों को व्यावहारिक बनाकर उनका प्रयोग करते हैं; अतः वे गिन्नी का सोना होते हैं। गांधीजी भी आदर्शवादी थे, इसलिए उन्हें गिन्नी का सोना कहा गया है। गांधीजी का आदर्शवाद अन्य आदर्शवादियों से अलग था। वे आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर नहीं उतारते थे, बल्कि व्यावहारिकता को ही आदर्शों के स्तर पर ले जाते थे। इस प्रकार वे सोने को ताँबा नहीं, बल्कि ताँबे को ही सोना बना देते थे।

(II) झेन की देन

प्रश्न 29 : 'झेन की देन' पाठ में जापानी लोगों को मानसिक रोग होने के क्या-क्या कारण बताए गए हैं? आप इनसे कहाँ तक सहमत हैं? तर्कसहित लिखिए।

अथवा **जापान में मानसिक रोग के क्या कारण बताए गए हैं? उससे होने वाले प्रभाव का उल्लेख करते हुए लिखिए कि इसमें 'टी-सेरेमनी' की क्या उपयोगिता है?** *(CBSE 2017)*

उत्तर : 'झेन की देन' पाठ में जापानी लोगों को मानसिक रोग होने के विभिन्न कारणों में–जीवन की अधिक रफ़्तार, मानसिक तनाव, उच्च स्तर की प्रतिस्पर्धा आदि बताए गए हैं। हम इनसे पूर्णतः सहमत हैं। जापान ने तकनीकी क्षेत्र में विश्व में शीर्ष स्थान पाया है, परंतु वह अन्य सभी क्षेत्रों में भी अमेरिका से प्रतिस्पर्धा कर उससे आगे निकलना चाहता है। यही कारण है कि वे महीनेभर के काम को एक ही दिन में पूरा करने की कोशिश करते हैं। काम के इसी दबाव के कारण उनका मानसिक तनाव बढ़ जाता है और वे मानसिक रोग से पीड़ित हो जाते हैं। जापानियों को मानसिक रोगों से बचाए रखने में 'टी-सेरेमनी' की बड़ी उपयोगिता है; क्योंकि इससे उनके दिमाग की रफ़्तार धीरे-धीरे धीमी पड़ जाती है और उसमें एक समय ऐसा भी आता है, जब वह थोड़ी देर में बंद हो जाती है। तनाव से मुक्ति का यह क्षण उसे शांति प्रदानकर उसकी सारी मानसिक व्याधि को हर लेता है।

प्रश्न 30 : "हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए।" 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' पाठ के आधार पर इस कथन को स्पष्ट करते हुए लिखिए कि लेखक ने ऐसा क्यों कहा? *(CBSE 2015)*

अथवा **"केवल वर्तमान सत्य है"– 'झेन की देन' के आधार पर टिप्पणी कीजिए।** *(CBSE 2017)*

उत्तर : लेखक ने केवल वर्तमान को सत्य माना है और उसी सत्य में जीने की सभी को प्रेरणा दी है। वर्तमानकाल ही इस मिथ्या संसार का एकमात्र सत्य है। भूतकाल इसलिए मिथ्या है; क्योंकि वह बीत चुका है और कभी लौटेगा नहीं। उस काल की खट्टी-मीठी यादों के अतिरिक्त हमारे पास उसका कुछ शेष नहीं होता। भविष्यत्काल इतना अनिश्चित है कि कोई भी आज तक उसके विषय में जान नहीं पाया, इसलिए उसे भी सत्य नहीं माना जा सकता है। जिन क्षणों में हम इस संसार में विद्यमान हैं, वही सबसे बड़ा सत्य है और वही वर्तमान है। अतः उन क्षणों को सहजता से जीते हुए, कर्मरत रहते हुए तथा तनावरहित होकर हम अपना जीवन जिएँ, वही उत्तम है। लेखक के कहने का तात्पर्य भी यही है कि जो सत्य है, वही हमारे समक्ष है और वह केवल वर्तमान है।

प्रश्न 31 : पाठ में वर्णित 'टी-सेरेमनी' का शब्द-चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : वह एक छह मंजिला इमारत थी। उसकी छत पर दफ़्ती की दीवारों से बनी एक सुंदर पर्णकुटी थी। उसमें सुंदर चटाई बिछी हुई थी। कुटी के बाहर एक बेढौल मिट्टी का बरतन था, जिसमें पानी भरा था। लेखक और उसके मित्र ने उसमें हाथ-पैर धोए, तौलिये से पोंछे और फिर अंदर गए। अंदर एक चाजीन बैठा था। उसने उठकर दोनों को झुककर प्रणाम किया और आइए, तशरीफ़ लाइए कहकर स्वागत किया। उन्हें बैठने की जगह दिखाई। अँगीठी सुलगाई। उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे से जाकर कुछ बरतन लाया। उन्हें तौलिये से साफ़ किया। उसकी इन सभी क्रियाओं में लेखक और उसके मित्र को मधुर संगीत की धुन जैसी अनुभूति हो रही थी। वहाँ अद्भुत शांति थी। चायदानी में पानी का खदबदाना भी उन्हें सुनाई दे रहा था।

प्रश्न 32 : लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर : लेखक के मित्र ने बताया कि जापानी लोगों के दिमाग में बहुत तेज़ी है। वे चलते नहीं, बल्कि दौड़ते हैं। बोलते नहीं, बल्कि बकते हैं। वे एकांत में बड़बड़ाते रहते हैं। अमेरिका से प्रतिस्पर्धा के कारण वे एक महीने का काम एक दिन में करने की कोशिश करते हैं। इसके लिए उन्होंने दिमाग की स्पीड बढ़ा दी है। यही कारण है कि वे मनोरोगी हो गए हैं। हम इन कारणों से पूर्णतः सहमत हैं; क्योंकि कार्य की अधिकता, असंतुष्टि और जल्दबाज़ी मन को तनावग्रस्त और खिन्न करती है। इससे मनुष्य की स्थिति पागलों जैसी हो जाती है।

प्रश्न 33 : मृगाक्षी एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में मैनेजर के पद पर आसीन है। श्रेष्ठ संचालन व बहुमुखी प्रतिभा की धनी होने के साथ ही बुद्धिमानी से तथ्यों को सुलझाने और सभी कार्यों को व्यवस्थित करने में उसका कोई सानी नहीं। वह रात-दिन काम में जुटी रहती है। कंपनी के स्तर को बढ़ाने के लिए सदैव प्रयासरत रहती है। कुछ दिनों से उसके सिर में दर्द रहने लगा है तथा नींद भी ठीक से नहीं आती। ज़रा-ज़रा सी बात में चिड़चिड़ापन होता है तथा अक्सर उदासी उसे घेरे रहती है। इसका क्या कारण हो सकता है? 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' पाठ में 'झेन की देन' हमें जो सीख प्रदान करती है, क्या वह मृगाक्षी के लिए सही साबित हो सकती हैं? स्थिति का मूल्यांकन करते हुए अपने विचार लिखिए। *(CBSE SQP 2022 Term-2)*

उत्तर : मृगाक्षी की स्थिति का मूल्यांकन करने से पता चलता है कि वह मानसिक रोग से ग्रसित हो चुकी है। उसके मानसिक रोग का वही कारण है, जो 'झेन की देन' पाठ में जापानियों के मानसिक रोग का बताया गया है। मृगाक्षी ने अपने दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगा लिया है। वह एक महीने का काम एक दिन में कर देना चाहती है। इस अपेक्षा के कारण वह तनाव ग्रस्त हो गई है। दिमाग को आराम न मिलने के कारण उसे मानसिक रोगों ने घेर लिया है। सिर में दर्द रहना, नींद न आना, चिड़चिड़ापन और उदासी मानसिक रोग के लक्षण हैं। अपने दिमाग को स्वस्थ बनाने के लिए मृगाक्षी को 'योग' और 'ध्यान' का सहारा लेना चाहिए, जिस प्रकार जापानी दिमाग को आराम देने के लिए 'टी-सेरेमनी' का सहारा लेते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 34 : 'झेन की देन' पाठ के आधार पर बताइए कि पर्णकुटी में चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या-क्या परिवर्तन महसूस किए? ***(CBSE 2022 Term-2)***

उत्तर : लेखक डेढ़ घंटे तक चाय की चुसकियाँ लेता रहा। चाय पीने के बाद उसे महसूस हुआ, जैसे उसके दिमाग की रफ़्तार धीरे-धीरे धीमी पड़ती जा रही है। थोड़ी देर में वह बिलकुल बंद हो गई। उसे लगा मानो वह अनंतकाल में जी रहा है। उसे सन्नाटा भी सुनाई देने लगा। चाय पीते-पीते लेखक के दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण उसके सामने था और वह अनंतकाल जितना विस्तृत था, चाय पीने के बाद लेखक को मालूम पड़ा कि जीना किसे कहते हैं।

●

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in